प्रश्न : feminine energy क्या है ?

feminine का मतलब है passiveness, बहने का गुण, पानी जैसे बहता है, पानी का नेचर feminine है, पानी को देख के लगता है बहोत ही सॉफ़्ट है, पानी के रास्ते में पत्थर आए तो पानी फ़ेल जाता है, पत्थर से उसे शिकायत नहीं की तुम क्यूँ बीच में आए, धिस इस पेसिवनेस, पर उस पेसिवनेस के अंदर एक अक्टिवनेस छिपी है, की पानी बहना चाहता है, बहने की आदत, यह चीज़ पानी को बहने के लिए मजबूर बनाती है की उन्हें बहना है, जैसे पानी से भरा कोई पात्र टूट जाए तो पानी तुरंत बहने लगता है, जैसे लगता है पानी सालों से तत्पर था बहने के लिए,,,,,, किसी ने उसे रोक रखा था,,,,, पात्र ने उसे रोक रखा था, यह पानी की दूसरी बाजु है, पेसिवनेस में अक्टिवनेस छिपी है, पेसिवनेस का मतलब है feminine एनर्जी, पर यह feminine एनर्जी पेसिवनेस और अक्टिवनेस का जोड़ है, पेसिवनेस में छुपी अक्टिवनेस पानी के दुःख का कारण है, पानी की बहने की चाहत में कोई बाधा डाले तो दुःख तो होता होगा, पानी बहने का रास्ता ढूँढ ही लेता है, इस अस्तित्व में पानी अकेला तो है नहीं, कोई ना कोई अड़चन आ ही जाती है, अस्तित्व बहोत बड़ा है,

वैसे ही स्त्री में एक अक्टिवनेस छुपी है, स्त्री हमेशा कुछ ना कुछ चाहती है पर पेसिव तरीक़े से, अगर उन्हें कही जाना हो तो वो चाहती है कोई उसे लेके जाए, बिलकुल पानी की तरह, पानी की पेसिवनेस और अक्टिवेनेस एक ही तरह की है, एक तो बहना और दूसरा बहने की चाहत, की पात्र में पानी सालों से भरा हो फिर पात्र टूट जाए तो पानी बिना रुके बह जाएगा, पानी नहीं कहेगा की इस पात्र ने सालों से मुजे एक जगह पे एक आकर में रोक के रखा अब में रुका रहूँगा,,,, नहीं बहूँगा, पर पानी बेह जाता है, जैसे लगता है बहने के लिए तत्पर ही था, सालों से तपस्या कर रहा था… बहने के लिए, पर पैसिव तरीक़े से, कोई उस पात्र को तोड़े बस वही राह तक रहा था, स्त्री में पेसिवनेस अनेक रूप से बाहर आती है, कभी अक्टिवनेस देख ने को मिलती है, कोई स्त्री पूर्ण स्त्री नहीं है, और कोई पुरुष पूर्ण पुरुष नहीं है, एक volatility है मनुष्य में, स्त्री की पेसिवनेस को ठेस पहोचती है तो उसे दुख होता है, कोई उस पर ध्यान ना दे तो उसे दुख होता है, कोई उसे सुंदर ना कहे तो दुख होता है, किसी ने उसे छोड़ दिया तो दुःख होता है, कोई उसे कही लेके नहीं जाए तो दुःख होता है, यह इनकी अक्टिवनेस में छिपी पेसिवनेस के कारण होता है,

पानी निर्जीव है और स्त्री सजीव है, पानी अपने स्वभाव से बँधा है पर स्त्री नहीं, स्त्री अपने दोहरे पन से ऊपर उठ सकती है, मेरा कहने का मतलब की स्त्री सम्पूर्ण हो सकती है, जब स्त्री दो भाग में बटी हो तो तब वो सम्पूर्ण नहीं है, इस दोहरेपन से एक खिंचाव होता है, एक बेचेनि होती है,, आपने अनुभव किया होगा कि कभी कभी आपके जीवन में ऐसे क्षण आए होंगे जब आपकी चाहत हो वो आपको मिला होगा, तब आपको ख़ुशी महसूस हुयी होंगी, तब आपको लगा होगा की जीवन बहोत सुंदर है,,,, जब जीवन में चाहत का तनाव ना हो तब ख़ुशी आती है,,, पर जब सुख है तब दुःख भी है,,,पर जैसे जैसे आप चाहत से मुक्त हो जाते हो वैसे वैसे जीवन में शांति महसूस होती है, चाहत आपकी एनर्जी को बाटती है इसलिए जैसे जैसे आप अपनी चाहत से मुक्त होते हो वैसे वैसे पूर्णता की और बढ़ते हो, और जैसे जैसे आप पूर्णता की और बढ़ते हो जीवन शांति की और जाता है।

Aasthit